IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वृज संस्कृति में साधु और संत

Isha Acharya

(Research scholar) , DEI Agra,

Drawing & Painting, Faculty of Arts

DEI Agra,

Dr.Vijaya kumar(Assistant professor),

Drawing and Painting,Faculty of Arts

सारांश

कला ह्रदय के आंतरिक भावनाओं और अभिव्यक्तियों को स्पष्ट करती है | कला संस्कृति कला जगत में ऐतिहासिक क्रिया कलापों पुराणिक इतिहास, सभ्यताओं, सांस्कृतिक प्रवृति का ही प्रतिबिम्ब है | भारतवर्ष में पुराणिक काल से ही कलाकारों ने यहाँ कला को साधना मान कर कला के प्रति अपनी सेवा भावना और निष्ठा सिद्ध की है और उसे एक संस्कृति का रूप प्रदान किया है | भारत भक्ति की भूमि है, जो हमें अपनी आध्यात्मिकता, संस्कृतियों और परम्पराओं से जोड़े रखती है | आज भी इस देवभूमि की पहचान कला प्रेमी संत महात्माओं से जानी जाती है | कृष्ण प्रेम में वशीभूत ये केवल भक्त ही नहीं अपितु कलाओं के भी धनी थे | इन्होने अपने तप और साधना के बल पर श्री कृष्ण का प्रतिबिम्ब बनकर अपने शास्त्रीय संगीत, काव्य रचना, चित्रकारी अवं अन्य ललित कलाओं के माध्यम से समाज के समक्ष भक्ति आंदोलन की नीव स्थापित की और लोगों में पुनः कला के प्रति समर्पण की भावना जाग्रत की जो आज भी जन मानस के हृदयों में जीवंत है | वृज क्षेत्र भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का ही एक पावन क्षेत्र है | वृज संस्कृति की पहचान आज भी यहाँ वास करते कला प्रेमी साधु और संतों से जानी जाती है | वृज के कलाकारों ने साधु-संतों की भाती अपनी प्रत्येक कलाओं को तप और साधना के साथ भक्ति से जोड़ा है | आज के परिवेश में साधु-संतों का संघ अति मधुर और दुर्लभ है, इसलिए जीवन का कल्याण करने हेतु ऐसे व्रजधाम के संतों-महात्माओं का जीवन अध्ययन चरित्र का मनन और चिंतन करना परम आवश्यक है | ये ही व्रजधाम कला संस्कृति की धरोहर है |

प्रस्तावना

भारत देवलोक भूमि है | इस पुण्यभूमि में जन्म लेना जैसे मृत्यु उपरांत चौरासी लाख योनियों से मुक्ति पा लेने के समान है | ये हमारे कुछ पिछले जन्म के शुभ संस्कारो का ही फल ही है जो हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ | भारत भक्ति की भूमि है, जो हमें अपनी आध्यात्मिकता, संस्कृतियों और परम्पराओं से जोड़े रखती है अर्थात इससे भी अधिक आनन्दमयी और परमार्थ का अवसर हमारे लिए तब सिद्ध हो जाता

है जब हमें वृज रज में जन्म लेने और साधु-संतों का सानिध्य प्राप्त करने का अवसर मिलता है| वृज नगरी प्रेम की नगरी है जहाँ स्वयं श्री कृष्ण अवतरित हुए और बहुत सी मन-मोहक लीलाएँ की| यह प्रेम के प्रतीकत्व युगलजोड़ी राधा कृष्ण की क्रीड़ांगन स्थली है इसलिए वृज में वास करना मानों चारों धाम (पूर्व दिशा में जगन्नाथ पुरी, पश्चिम में द्वारका, उत्तर में बद्रीनाथ और दक्षिण में रामेश्वरम) का फल एक बार में पा लेने जैसा है| इसी फल प्राप्ति की अभिलाषा से यहाँ बहुत से ऋषि मुनि संत-साधु मोक्ष प्राप्ति व प्रभु के एक मात्र दर्शन के लिए समस्त सांसारिक वस्तुओं का त्याग कर यहाँ वृज मंडल आकर बस गए और अपने आराध्य की साधना में डूब गए| श्री कृष्ण साधक यहाँ वृज रज में विरक्त जीवन व्यतीत करते है और वृज की मिट्टी को अपने ह्रदय से लगाकर कृष्ण की अनेका एक लीलाओं का अपनी तप और साधना के माध्यम से उनका रसपान करते है|

वृज संस्कृति की महिमा इन्ही साधु और संतों से है, जो आज भी वृज के वनों में अपनी कुटिया बसायें लता पताओं से घिरे वृक्षों के बीच कृष्ण की भक्ति में लीन है | यहाँ की कला संस्कृति कृष्ण रुपी प्रेम का सागर है | वृज में संस्कृति को कला साधना मान कर पूजा है | वास्तव में यह भूमि अत्यंत ही पवित्र और कृष्ण रस में डूबी भावभूमि है | वृज क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य का ही एक पावन क्षेत्र है | वृज मंडल की सीमाएँ चौरासी कोस रमणीक स्थलों का सांगोपांग है | वर्तमान में मथुरा जिला राजस्थान शहर के डीग और कामवन के कुछ क्षेत्रों से जहाँ से ब्रजयात्रा विस्तृत होती है उसे वृज क्षेत्र कहा जाता है | इसमें मथुरा, वृन्दावन, नंदगाव, बरसाना, गोवर्धन, गोकुल, महाबन, कामवन, बलदेव, डीग आदि सभी कृष्ण की सम्पूर्ण लीलाओं से सम्बंधित स्थल सम्मिलित है | यहाँ के मंदिरों वन- उपवन निकुंजों में बदलती ऋतुओं की पुनीत छठा देखते ही बनती है, मानो चारों तरफ भक्ति रस की अमृत वर्षा हो रही हो, कानों में श्रवण होती हुई मधुर कीर्तन ध्वनि जिसमे यहाँ के साधु सन्यासी तथा बृजवासी उसमे प्रतिदिन स्नान कर प्रभु की मनोहर छवियों को रसस्वादन कर तर जाते है ऐसी ही वृज की मनोहर छवि श्रीमद्भागवत में वर्णित है |

शृणुतं दत्तचित्तौ मे रहस्यं व्रजभूमिजम् |

व्रजनं व्याप्तिरित्युक्त्या व्यापनाद् व्रज उच्यते ||

गुणातीतं परं ब्रह्म व्यापकम् व्रज उच्यते |

सदानन्दं परं ज्योतिर्मुक्तानां पदमव्ययम् ||

यह श्लोक **श्रीमद्भागवत-महापुराण** के द्वितीय महात्म्य के प्रथम अध्याय में श्लोक संख्या 19वे तथा 20वे जो की श्रीस्कन्द पुराण में वर्णित है | इस श्लोक में शाण्डिल्य मुनि परीक्षित और वज्रनाभ को वृज की महिमा का वर्णन और वृज शब्द के अर्थ की व्याख्या करते है | उनके अनुसार वृज शब्द का अर्थ **व्याप्ति** है | सत्य, रज और तम गुणों से युक्त अतीत जो परमब्रह्म निहित है वही व्यापक है, इसलिए वृज वो ही है, वही सदानन्दस्वरूप अविनाशी व परम ज्योतिर्मयी है, और इसी परमब्रह्मस्वरूप जैसे वृजधाम में ही भगवान श्री कृष्णा निवास करते है | हमारे वृज मंडल में ऐसे कई संत महात्मा हुए जिन्होंने ऐतिहासिक काल से ही कला का बहुत ही सुन्दर रूप प्रस्तुत किया | आज भी इस देवभूमि की पहचान कला प्रेमी संत-महात्माओं से जानी जाती है | कृष्ण प्रेम में वशीभूत ये केवल भक्त ही नहीं अपितु कलाओं के भी धनी थे, इन्होने अपने तप और साधना के बल पर श्री कृष्ण का प्रतिबिम्ब बनकर

अपने शास्त्रीय संगीत, काव्य रचना, चित्रकारी अवं अन्य ललित कलाओं के माध्यम से समाज के समक्ष भक्ति आंदोलन की नीव स्थापित की और लोगों में पुनः कला के प्रति समर्पण की भावना जाग्रत की जो आज भी जन मानस के हृदयों में जीवंत है |

वृज के साधु और संतों का विलक्षण स्वरुप

प्राम्भिक काल से ही इन वृज विभूतियों का स्वरुप बहुत ही विलक्षण और दिव्य रहा है | संतो और महात्माओं के श्वेत व भगवा वस्त्र बहुत ही साधारण आभा वाले होते है | उनकी पोशाक धारण करने की शैली उनके जीवन जीने की कला और व्यक्तित्व को साफ दर्शाती है | मिट्टी के पात्रों और पेड़ के पत्तों में अल्प भोजन ग्रहण करना, सरल वस्त्र जिनमे कोई आडम्बर चमक दमक नहीं होती | सुगम वाणी, मधुर व्यवहार और साफ़ चरित्र उन्हें सभी लोकमानस से पृथक बनाता है | वैरागी जीवन साधरण वेशभूषा और अल्प भोजन ही उनके जीवन का सार था, जो की उनकी परम भक्ति का प्रतीक और परमात्मा के और समीप जाने में प्रेरणादायक सिद्ध हुआ | उनके दृष्टिकोण से सादगी भरा जीवन ही एक सौन्दर्यपरम और प्रामाणिक जीवन है, जो की जीवन के सफल कार्यों प्रभु की भक्ति न्यूनतम विचारों और ध्यान में व्यवधान उत्तपन्न नही करता है | **डॉ अवधबिहारी लाल कपूर** की **'व्रज क भक्त'** पुस्तक पृष्ठ संख्या 41 में शुक सम्प्रदाय के श्रीरूपमाधुरीजी जो स्वयं रसिक संत थे | उन्होंने संत श्रीनारायणस्वामी जी के सरल जीवनवृत्तांत मधुर भक्ति भाव, रसिक प्रेम की व्याख्या अपने पदों में कुछ इस प्रकार व्यक्त की है |

श्रीनारायण स्वामी, श्रीवृंदावन नामी,

रहै सदा निष्कामी, सन्त कलिमें सूर है ।।

जाको त्याग है विचित्र, तन मनसे पवित्र,

राखे कोपीन मात्र वस्र, रहै फैसन से दूर है ।।

नैन प्रेम रंगमाते, हरि दर्शन पाये जाते

रटना नामकी लगाते, रहे रसमें जु चूर है ।।

भासैं रूपमाधुरीदास, आयो प्रभु में बिस्वास,

त्यागो संपत्ति विलास, मन-मस्त भरपूर है ॥

अर्थात वह निष्काम भाव से वृन्दावन में वास करते है, जिनके मन में प्रभु की भक्ति के सिवाए और कोई कामना नही है | वह कलयुग में संतों के मध्य सूरमा है | इनका त्याग विचित्र श्रेणी का है तथा तन और मन से पवित्र है | वस्त्र के नाम पर सिर्फ लंगोटी धारण करते है | भौतिकवाद से दूर है | इनको नैनों से प्रेम टपकता है और हरी दर्शन में सदा मगन रहते है | भक्ति रस में चूर होकर भगवान के नाम की रटना लगाते रहते है | प्रभु की भक्ति में इनका अटूट विश्वास है | धन सम्पदा का त्याग कर दिया है और इनका हृदय भक्ति की मस्ती से भरपूर है | इन शब्दों में संत स्वामी जी के वैरागी और सिद्ध रूप के दर्शन बड़ी सुंदरता से श्री रूपमाधुरी जी ने व्यक्त किये है |

भगवा वस्त्र में वृन्दावन के साध

यमुना केशीघाट पर ध्यान में लीन संत

वृज कला संस्कृति में साधु और संतों की भूमिका

वृज की संस्कृति में शास्त्रीय संगीत के रूप में हवेली संगीत, ध्रुपद और मंदिरों में प्रभु के विग्रहों के समक्ष पुष्पों से सुस्सजित फूल बंगले, हिंडोले, रासलीला, सांझीकला और मूर्तिकला सम्मलित है, जिनको बड़ी मधुरता से वृज में स्थापित यहाँ प्रगटे कलानुरागी साधु संतों ने ही किया। वृज कला संस्कृति के प्रवर्तक और श्री कृष्ण के परम उपासक स्वामी **श्री हरिदास** जी ललिता सखी के रूप में व्रज वृन्दावन में सन 1480 में जन्मे जो केवल वैष्णव भक्त न होकर महान संगीतकार भी थे, जिन्होंने अपनी काव्य व पद रचनाओं को गायन-वादन द्वारा संगीत साधना से जोड़ा और ध्रुपद शास्त्रीय संगीत को स्थापित किया। सदैव अत्यंत माधुर्यपूर्ण संगीत में भावविभोर होकर सखी भाव से श्यामा- श्याम कुँजबिहारी को उन्होंने इतना लाड लड़ाया की वह श्रीबांकेबिहारी के रूप में प्रकट हो गये। तानसेन और बैजू बावरा जैसे प्रसिद्ध गायनाचार्य इनके शिष्य थे। ऐसे ही वल्लभ सम्प्रदाय द्वारा स्थापित अष्ठछाप भक्ति संगीत (प्रभु की अष्ठ याम सेवा) के कवी संगीतज्ञों में से एक **सूरदास** जी हुए, जिन्होंने अपनी काव्य रचना को संगीत की माला में पिरोकर भगवान श्री कृष्ण के बाल्यावस्था से लेकर यौवनावस्था के श्रृंगार और शांत रस का अध्भुत स्वरुप व्रजभाषा में प्रकट किया। सूरदास जी ने अपार शक्ति के फलस्वरूप नेत्रहीन होकर भी श्री कृष्ण की दिव्य दृष्टि पायी और अष्टछाप के आठों महाकवियों के प्रमुख काव्य नेता की उपाधि ग्रहण की। **भगवती प्रसाद सिंह** जी की पुस्तक **'भारतीय संस्कृति में श्री कृष्ण'** में महाकवियों के तीन आयाम भक्ति, कवित्व और संगीत के संयोजन हेतु संतों के कौशलपूर्ण विशेषता को स्पष्ट किया है। काव्य संसार में जिनकी परिदृश्यता तथा महत्वता के दुर्लभ दृश्य संतों की काव्य संरचना, पद गायन के विशिष्ट गुण दृष्टिपात होते है। इन महानुभावों की पदगायन काव्य रचना ही कलाकारों की आधार शिला के रूप में स्थापित हुई और कलाकारों को एक नयी राह मिली। अनेक चित्रकारों ने संतों की वाणी को आधार स्तम्भ मानकर अनेक चित्रों को निर्मित किया जिनमें मुख्यतः राधाकृष्ण की अनुरंजक लीलाऐं के स्वरूपों का चित्रांकन अधिक था। कलाकारों ने संतों और महात्माओं द्वारा दी गयी इस सप्रेम भेट को अपनी कला साधना के साथ भक्तिभाव से अपनी चित्रकारी में संग्रहित किया तथा वंदना के रूप में पूजा

और भारतीय संस्कृति को स्थापित कर माधुर्यपूर्ण स्वरुप अंकित किया | काव्य रचना भारतीय चित्रकला संस्कृति की अमर धरोहर बनी | रासलीला, सांझीकला, मंदिरों में आलंकारिक फूल बंगले, शरद ऋतु प्रारम्भ होते ही स्वर्ण एवं चाँदी के हिंडोलों में विराजते श्री राधाकृष्ण के विग्रहों के दर्शन का सौन्दर्यमयी वातावरण इन्ही काव्य रचनाओं का फल है | व्रजधाम की पावन भूमि वृन्दावन में 500 वर्ष पूर्व यहाँ श्री चैतन्य महाप्रभु (भगवान के अवतार) यहाँ पधारे और उन पवित्र स्थलों का प्रकटीकरण किया जो समय गुजरते तिरोभूत हो गए थे | उन्होंने हरिनाम संकीर्तन को दुनिया के समक्ष प्रकट किया और हिन्दू वैष्णव धर्म को सर्वत्र प्रचारित किया | उन्होंने अपने दो प्रिय शिष्य रूप गोस्वामी और सनातन गोस्वामी को वृन्दावन रहने तथा वैष्णव सम्प्रदाय को विकसित करने का आदेश दिया | 16 वीं सदी में इन संतों से और वैष्णव संत जीवगोस्वामी, रघुनाथ भट्ट, गोपाल भट्ट, रघुनाथदास जी जुड़े और एक समूह का गठन हुआ | इन संतों ने अपने गुरुओं के निर्देशनुसार गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय धार्मिक दर्शन और अभिवादन में आवश्यक भूमिका निभाई | वृन्दावन के ये छः गोस्वामी संत वृज में भक्ति के मार्ग और आध्यात्मिक तत्वों, सत्यों को प्रस्तुत कर प्रमुख धार्मिक गुरु और शिक्षक के रूप में स्थापित हुए जिन्होंने यहाँ सप्त देवालयों की स्थापना की | वृन्दावन में स्थापित सप्त देवालय जैसे (राधा मदममोहन मंदिर, राधा गोविन्द देव मंदिर, राधा गोपीनाथ मंदिर, राधा दामोदर मंदिर, राधारमण मंदिर, राधाश्यामसुंदर मंदिर, गोकुलानंद मंदिर) उत्कृष्ट वास्तुकला का प्रदर्शन करने के साथ- साथ भक्ति साधकों को भक्ति परंपरा का अनुसरण, सप्रेम ह्रदय में भगवत प्राप्ति की कामना, पूजा और ध्यान का अनुभव कराने के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करते है | षड गोस्वामी द्वारा वृज में रचित ग्रन्थ एवं समूह हर क्षेत्र से व्रजधाम में आये भक्तों और परंपरा के अनुयायियों को हिन्दू धर्म की शाखा में संघटित तथा आकर्षित करता है |

व्रजधाम वृन्दावन की रासलीला

वृन्दावन की प्रसिद्ध सांझीकला

चांदी के हिंडोले में विराजमान श्रीराधारमणलाल जी

निष्कर्ष

वृज कला संस्कृति में वृज निधि साधु-संतों का यह योगदान सदा वंदनीय रहेगा। भारतीय समाज में एकता स्थानीय साहित्य व ग्रंथों की लोकप्रियता, भक्ति की स्वतंत्रता में साधु संतों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। ऐसे साधु संतों के प्रयासों से लोगों की विचारधाराओं में बृहत परिवर्तन हुए जिनसे लोक कला संस्कृति एक पुष्प की भाती प्रस्फुटित हुई और कला जगत में संस्कृति की स्थापना की सुगंध सर्वत्र जन मानस में बिखर गयी। आज के परिवेश में साधु-संतों का संघ अति मधुर और दुर्लभ है, इसलिए जीवन का कल्याण करने हेतु ऐसे व्रजधाम के संतों-महात्माओं का जीवन अध्ययन चरित्र का मनन और चिंतन करना परम आवश्यक है। ये ही व्रजधाम कला संस्कृति की धरोहर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सिंह, भगवती प्रसाद - 1976 'भारतीय संस्कृति में श्री कृष्ण' श्रीकृष्ण-जन्मस्थान सेवा-संस्थान, मथुरा।
- कपूर, अवधबिहारी लाल - 2003 'व्रज क भक्त' दि इंडियन प्रेस प्रा० लि०, इलाहाबाद।
- वेदव्यास, महर्षि - 2000 'श्रीमद्भागवत-महापुराण' गीताप्रेस, गोरखपुर।
- राय, उपेन्द्रनाथ - 2018 'पुष्टिमार्ग की वार्ताओं का परिचय' सारस्वत ग्राफिक्स, वृन्दावन।